ISSN -PRINT-2231-3613 ONLINE-2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
UGC APPROVAL NO. - 42652

Received on 9th Feb 2018, **Revised** on 17th Feb 2018; **Accepted** 27th Feb 2018

शोध पत्र

विद्यार्थियों में संस्कृत में भाषायी दक्षता, पठन एवं लेखन कौशल के विकास में क्रिया आधारित उपागम की प्रभावशीलता

* डॉ. बी.एल. श्रीमाली, सहायक आचार्य
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय
उदयपुर (राजस्थान)

मुख्य शब्द – *पाठशाला पद्धति, व्याकरण–अनुवाद पद्धति, पाठ्य–पुस्तक पद्धति, प्रत्यक्ष पद्धति, संग्रन्थन उपागम आदि।*

सारांश

प्रस्तुत शोध आलेख में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में संस्कृत में भाषायी दक्षता, पठन एवं लेखन कौशल का विकास करने हेतु 'क्रिया आधारित उपागम' (जं ठेंमक ।चचतवंबी) की प्रभावशीलता का विवेचन किया गया है । इस प्रायोगिक शोध को पूर्व एवं पश्च परीक्षण नियंत्रित समूह–प्रायोगिक समूह आकल्प के माध्यम से पूर्ण किया गया । इस शोध में न्यादर्श के रूप में 30 विद्यार्थी प्रायोगिक समूह में एवं 30 विद्यार्थी नियंत्रित समूह में रखे गये । दोनों समूहों के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्य .01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया । सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी मान का उपयोग किया गया । यह शोध सेवा पूर्व एवं सेवारत शिक्षकों को भाषा शिक्षण के सन्दर्भ निर्मितवाद एवं गतिविधि आधारित शिक्षण के सन्दर्भ में मार्गदर्शन प्रदान करेगा ।

प्रस्तावना

मानव की शक्ति सम्प्रेषण है; भाषा भावनाओं की अभिव्यक्ति है। अन्य प्राणियों को यह सुविधा उतनी प्राप्त नहीं है जितनी मानव को। भाषा के कारण ही ज्ञान सदियों से लेकर आज तक उपलब्ध है। हर प्रकार का ज्ञान भाषा में उपलब्ध है। भाषा के कारण ही हम सामाजिक प्राणी हैं। मानव की प्रगति में भाषा विशेष रूप से सहायक रही है। हमारे पूर्वजों के समस्त अनुभव हमें भाषा के माध्यम से ही प्राप्त हुए हैं। हमारे सभी शास्त्र और उनसे होने वाले सभी लाभ भाषा का ही परिणाम हैं।

भाषा वैज्ञानिकों एवं शिक्षा–शास्त्रियों ने भाषा के चार कौशल निर्धारित किए हैं जिन्हें संस्कृत भाषा शिक्षण में श्रवण, भाषण, पठन एवं लेखन कौशल के रूप में जाना जाता है। औपचारिक रूप से प्रत्येक भाषा शिक्षण का मुख्य उद्देश्य इन्हीं चारों भाषायी कौशलों का विकास करना होता है। भारत में संस्कृत भाषा शिक्षण के माध्यम से इन्हीं चार कौशलों का विकास करने के लिए उत्तरोत्तर अनेक विधियों एवं उपागमों का प्रादुर्भाव विभिन्न शिक्षा–शास्त्रियों के द्वारा किया गया जैसे पाठशाला पद्धति, व्याकरण–अनुवाद पद्धति, पाठ्य–पुस्तक पद्धति, प्रत्यक्ष पद्धति, संग्रन्थन उपागम इत्यादि। इन सभी पद्धतियों एवं उपागमों का मुख्य उद्देश्य उपर्युक्त चारों भाषायी कौशलों (श्रवण, भाषण, पठन एवं लेखन) का विद्यार्थियों में विकास करना रहा है। परन्तु सामान्यतः यह पाया गया कि उपर्युक्त विधियों एवं उपागमों में कुछ कमजोरियाँ हैं जिसके फलस्वरूप विद्यार्थियों में इन चारों भाषायी कौशलों का प्रभावी विकास संस्कृत भाषा में नहीं हो पा रहा है।

प्रत्येक भाषा शिक्षण का मुख्यतम उद्देश्य विद्यार्थियों में भाषायी कौशलों (श्रवण, पठन, भाषण एवं लेखन) का विकास करना सभी भाषाविदों एवं शिक्षा–शास्त्रियों ने एकमत से स्वीकार किया है। भाषा विषय में स्नातक/स्नातकोत्तर उत्तीर्ण करने पर भी छात्र उपयुक्त एवं स्तरानुकूल विचाराभिव्यक्ति करने में स्वयं को असक्षम पाते हैं। जबकि भाषा केवल एक विषय ही नहीं है, अपितु अन्य विषयों को पढ़ने का माध्यम भी है। इतने वर्षों तक भाषा अध्ययन के उपरान्त भी यह स्थिति क्यों? कहीं न कहीं तो भाषा शिक्षण में

कमी है, इस कारण ही 'भाषा अधिगम' उपयुक्त स्तर तक नहीं पहुँच पाता। यह विचार लगभग प्रत्येक भाषा एवं भाषा शिक्षण पर लागू होता है।

अभिभावकों तथा छात्रों में प्रचलित यह धारणा कि संस्कृत भाषा एवं व्याकरण रटने से आती है एवं अध्यापकों की यह समस्या कि छात्र समझते ही नहीं, वे संस्कृत पढ़ना ही नहीं चाहते इन भ्रान्तियों के निवारणार्थ शोधकर्ता द्वारा संस्कृत व्याकरण शिक्षण एवं भाषायी कौशलों के विकास हेतु एक नवीन उपागम का अन्वेषण किया गया। इस अन्वेषण में शोधार्थी द्वारा 'क्रिया आधारित उपागम' (जें ठेंमक ।चचतवंबी) की शिक्षण प्रक्रिया का सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त किया गया। शोधार्थी के भाषा शिक्षण एवं शिक्षण विज्ञान आधारित अनुभव के आधार पर यह महसूस किया कि 'क्रिया आधारित उपागम' (जें ठेंमक ।चचतवंबी) सम्भवतः विद्यार्थियों में संस्कृत में भाषायी कौशलों एवं व्याकरण ज्ञान का विकास कर सकता है।

इस अनुभव की व्यापक स्तर पर प्रायोगिक जॉच की गई जिसके परिणाम एवं निष्कर्ष यह बताते हैं कि 'क्रिया आधारित उपागम' (जें ठेंमक ।चचतवंबी) विद्यार्थियों में भाषायी कौशलों का विकास कर सकता है एवं व्याकरणिक सृजनात्मक का भी विकास कर सकता है। प्रायोगिक जॉच निम्नानुसार की गई:—

समस्या कथन

विद्यार्थियों में संस्कृत में भाषायी दक्षता, पठन एवं लेखन कौशल के विकास में क्रिया आधारित उपागम की प्रभावशीलता।

शोध उद्देश्य

1. विद्यार्थियों में संस्कृत में भाषायी दक्षता के विकास में 'क्रिया आधारित उपागम' (जें ठेंमक ।चचतवंबी) की प्रभावशीलता का पता लगाना।
2. विद्यार्थियों में संस्कृत में पठन कौशल के विकास में 'क्रिया आधारित उपागम' (जें ठेंमक ।चचतवंबी) की प्रभावशीलता का पता लगाना।
3. विद्यार्थियों में संस्कृत में लेखन कौशल के विकास में 'क्रिया आधारित उपागम' (जें ठेंमक ।चचतवंबी) की प्रभावशीलता का पता लगाना।

शून्य परिकल्पनाएँ

1. प्रायोगिक समूह के भाषायी दक्षता के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्यमान में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. नियंत्रित समूह के भाषायी दक्षता के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह के भाषायी दक्षता के पूर्व परीक्षणों के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. प्रायोगिक समूह के पठन कौशल के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. नियंत्रित समूह के पठन कौशल के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह के पठन कौशल के पूर्व परीक्षणों के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
7. प्रायोगिक समूह के लेखन कौशल के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
8. नियंत्रित समूह के लेखन कौशल के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
9. प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह के लेखन कौशल के पूर्व परीक्षणों के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिसीमन

1. **क्षेत्र**— प्रस्तुत शोध कार्य उदयपुर शहर के एक निजी विद्यालय तक सीमित रखा गया।

2. **चर**– निम्नांकित चरों तक सीमित रखा गया –

स्वतंत्र चर	आश्रित चर
'किया आधारित उपागम' (जें ठेंमक ।चचतवंबी)	भाषायी दक्षता
	पठन कौशल
	लेखन कौशल

न्यादर्श

चयनित विद्यालय की नवमीं कक्षा के समस्त विद्यार्थियों में से ज्ंइसम व ित्ंदकवउ छनउइमतेः के आधार पर 60 विद्यार्थियों का चयन किया गया। इन विद्यार्थियों को सिक्का उछालते हुए दो भागों में विभाजित कर निम्नानुसार दो समूह बनाए गए :–

समूह	छात्र संख्या
प्रायोगिक समूह	30
नियंत्रित समूह	30

शोध विधि

प्रायोगिक शोध विधि के अन्तर्गत 'पूर्व एवं पश्च परीक्षण नियंत्रित समूह–प्रायोगिक समूह आकल्प' का चयन किया गया।

उपकरण

इस शोध में निम्नलिखित तीन उपकरणों का विधिवत् निर्माण कर दत्त संकलन किया गया–

1. 'टास्क' (क्रिया) आधारित पूर्व एवं पश्च भाषायी दक्षता परीक्षण।
2. 'टास्क' (क्रिया) आधारित पूर्व एवं पश्च पठन कौशल परीक्षण।
3. 'टास्क' (क्रिया) आधारित पूर्व एवं पश्च लेखन कौशल परीक्षण।

पारिभाषिक शब्दावली

(1) **भाषायी दक्षता**– इस शोध कार्य में भाषायी दक्षता से तात्पर्य निम्नांकित था –

1. विद्यार्थियों की संस्कृत में व्याकरणिक दक्षता जिसके अन्तर्गत शुद्ध शब्द संरचना एवं शुद्ध वाक्य संरचना से है।
2. विद्यार्थियों द्वारा संस्कृत व्याकरण ज्ञान यथा–संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, क्रिया विशेषण, संधि, समास, शब्द–रूप, धातु रूप, कर्ता, लिंग, वचन, विभक्ति, लकार, उपसर्ग, प्रत्यय इत्यादि के लेखन कौशल में औपचारिक प्रयोग के साथ सकारात्मक, नकारात्मक, प्रश्नवाचक, विस्मयादिबोधक, आदेशात्मक एवं आशीर्वादात्मक वाक्य संरचना एवं प्रयोग।

(2) **पठन कौशल**

इस शोधकार्य में पठन कौशल से तात्पर्य निम्नांकित था –

विषय–वस्तु को पढ़कर/पढ़ते हुए उसमें से :–

1. सूचना, तथ्य इत्यादि संकलित करना।

2. शब्द, विशेषता, गुण इत्यादि के आधार पर वर्गीकरण करके सूची बनाना।

3. विषय–वस्तु आधारित प्रश्न बनाना।

4. सारांश निकालना।

(3) लेखन कौशल

इस शोध कार्य में लेखन कौशल से तात्पर्य निम्नांकित था –

पठित विषय–वस्तु में से संकलित सूचना/जानकारी के आधार पर –

1. स्थान, व्यक्ति एवं घटना का लिखित वर्णन करना।

2. परिच्छेद लेखन

3. सारांश लेखन

4. प्रतिवेदन लेखन

5. पत्र लेखन

6. प्रश्नोत्तर लेखन

7. प्रार्थना–पत्र लेखन

8. निबन्ध लेखन

(4) क्रिया आधारित उपागम

इस शोध कार्य में 'क्रिया आधारित उपागम' (जं ठेंमक ।चचतवंबी) से तात्पर्य भाषायी दक्षता, पठन एवं लेखन कौशल की उस गतिविधि से है जिसमें विद्यार्थी द्वय (च्ंपत) समूह अथवा समूह में अध्यापक द्वारा प्रदत्त कार्य करते हैं; किसी पठन सामग्री का अध्ययन कर सूचना को संकलित करते हैं एवं उस संकलित सूचना को लेखन कौशल के माध्यम से स्थानान्तरित एवं अभिव्यक्त करते हैं।

इस उपागम में मूल बल इस बात पर रहता है कि विद्यार्थी क्रियाशील होकर भाषा सीखे तथा भाषा का प्रयोग किसी सम्प्रेषणात्मक कार्य को करने के लिए करे। इस उपागम में सम्प्रेषण हेतु प्रयुक्त व्यूह रचना साध्य होती है। इस उपागम में पाठ का प्रारम्भ औपचारिक व्याकरण शिक्षण से न होकर उन शब्दों, वाक्यांशों से होता है जिनके माध्यम से विद्यार्थी निर्धारित क्रिया को सम्प्रेषण के सन्दर्भ में पूरा करते हैं। इस तरह उस प्रदत्त कार्य को हल करके तदनुसार भाषायी अधिगम व्यवहार करते हैं। छात्र शिक्षक को अधिगम कार्य का निष्कर्ष बताते हैं। इस प्रक्रिया द्वारा छात्र भाषा, विषय–वस्तु एवं सम्प्रेषणीय कौशल को सीखते हैं।

सांख्यिकीय तकनीक

इस शोध कार्य में दत्तों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं सह–सम्बन्धित मध्यमान आधारित 'टी' परीक्षण का उपयोग किया गया।

दत्त विश्लेषण एवं शून्य परिकल्पनाओं की जॉच

प्राप्त दत्तों का विश्लेषण कर शून्य परिकल्पनाओं की विधिवत जॉच करते हुए 'क्रिया आधारित उपागम' (जं ठेंमक ।चचतवंबी) की प्रभावशीलता भाषायी दक्षता, पठन एवं लेखन कौशल के विकास के सन्दर्भ में निम्नानुसार देखी गई :–

(1) **भाषायी दक्षता के विकास में 'क्रिया आधारित उपागम' (जें ठेंमक ।चचतवंबी) की प्रभावशीलता**

तालिका संख्या – 01

नियंत्रित समूह एवं प्रायोगिक समूह के भाषायी दक्षता के पूर्व परीक्षण एवं पश्च परीक्षणों के मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी' मान

परीक्षण	नियंत्रित समूह		प्रायोगिक समूह		सह–सम्बन्ध	'टी' मूल्य	परिणाम
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन			
पूर्व परीक्षण	19.02	9.24	19.12	10.89	.17	.04	असार्थक अन्तर
पश्च परीक्षण	19.62	8.98	67.02	17.24	–.01	13.32	.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

स्वतंत्रता अंश (कf) त्र29 सारणी मान

सार्थकता / विश्वास स्तर .05 स्तर पर त्र 2.04

.01स्तर पर त्र 2.76

व्याख्या

तालिका संख्या 01 यह दर्शाती है कि भाषायी दक्षता के अन्तर्गत नियंत्रित समूह के पूर्व परीक्षण एवं प्रायोगिक समूह के पूर्व परीक्षण के मध्य संगठित 'टी' मान .04 प्राप्त हुआ। जो कि सारणी मान (.05 स्तर पर 2.04 एवं .01 स्तर पर 2.76) से कम है जो यह स्पष्ट करता है कि भाषायी दक्षता के अन्तर्गत नियंत्रित समूह एवं प्रायोगिक समूह के पूर्व परीक्षणों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अर्थात पूर्व परीक्षण के समय प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह दोनों ही भाषायी दक्षता में समान ;म्नंसद्ध थे।

भाषायी दक्षता के अन्तर्गत प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह के पश्च परीक्षण के मध्य संगणित 'टी' मान 13.32 प्राप्त हुआ जो कि सारणी मान (.05 स्तर पर 2.04 एवं .05 स्तर पर 2.76) से अधिक है जो यह स्पष्ट करता है है कि नियंत्रित समूह एवं प्रायोगिक समूह के पश्च परीक्षण के मध्य .01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।

निष्कर्ष / शून्य परिकल्पनाओं की जॉच

उपयुक्त दत्त विश्लेषण के आधार पर शून्य परिकल्पना संख्या 03 **प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह के भाषायी दक्षता के पूर्व परीक्षणों के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। स्वीकार की गई** अर्थात् यह कहा जा सकता है कि पूर्व परीक्षण के समय दोनों समूह भाषायी दक्षता में समान स्तर पर थे।

तालिका संख्या – 02

नियंत्रित समूह एवं प्रायोगिक समूह के भाषायी दक्षता के पूर्व–पश्च परीक्षण के मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी' मान

समूह	पूर्व परीक्षण		पश्च परीक्षण		सह–सम्बन्ध	'टी' मूल्य	परिणाम
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन			
नियंत्रित समूह	19.02	9.24	19.62	8.98	.89	.76	असार्थक अन्तर
प्रायोगिक समूह	19.62	10.89	67.02	17.24	.10	13.50	.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

स्वतंत्रता अंश (क्f) त्र29 सारणी मान

सार्थकता/विश्वास स्तर .05 स्तर पर त्र 2.04

.01स्तर पर त्र 2.76

व्याख्या

उपर्युक्त तालिका यह दर्शाती है कि भाषायी दक्षता के अन्तर्गत नियंत्रित समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य संगणित 'टी' मान .76 प्राप्त हुआ। जो कि सारणी मान (.05 स्तर पर 2.04 एवं .01 स्तर पर 2.76) से कम है जो यह स्पष्ट करता है कि नियंत्रित समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रायोगिक समूह के भाषायी दक्षता के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य संगणित 'टी' मान 13.50 प्राप्त हुआ जो कि सारणी मान (.05 स्तर पर 2.04 एवं .01 स्तर पर 2.76) से अधिक है जो यह स्पष्ट करता है कि प्रायोगिक समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य .01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।

निष्कर्ष/शून्य परिकल्पनाओं की जॉच

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर शून्य परिकल्पना संख्या 02 कि **नियंत्रित समूह के भाषायी दक्षता के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है। स्वीकार की जाती है।**

शून्य परिकल्पना संख्या 01 कि **प्रायोगिक समूह के भाषायी दक्षता के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है। निरस्त की जाती है।**

(2) पठन कौशल के विकास में किया आधारित उपागम ;जें ठेंमक ।चचतवंबीद्ध की प्रभावशीलता

तालिका संख्या – 03

नियंत्रित समूह एवं प्रायोगिक समूह के पठन कौशल के पूर्व एवं पश्च परीक्षणों के मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी' मान

परीक्षण	नियंत्रित समूह		प्रायोगिक समूह		सह–सम्बन्ध	'टी' मूल्य	परिणाम
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन			
पूर्व परीक्षण	26.77	6.57	26.67	8.55	.26	.06	असार्थक अन्तर
पश्च परीक्षण	27.62	6.45	52.77	16.80	.26	8.42	.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

स्वतंत्रता अंश (क्f) त्र29 सारणी मान

सार्थकता/विश्वास स्तर .05 स्तर पर त्र 2.04

.01स्तर पर त्र 2.76

व्याख्या

उपर्युक्त तालिका यह दर्शाती है कि पठन कौशल के अन्तर्गत प्रायोगिक समूह के पूर्व परीक्षण एवं नियंत्रित समूह के पूर्व परीक्षण के मध्य संगणित 'टी' मान .06 प्राप्त हुआ। जो कि सारणी मान (.05 स्तर पर 2.04 एवं .01 स्तर पर 2.76) से कम है जो यह दर्शाता है प्रायोगिक शिक्षण के पूर्व दोनों समूह अकादमिक स्तर पर समान थे।

नियंत्रित समूह के पश्च परीक्षण एवं प्रायोगिक समूह के पश्च परीक्षण के मध्य संगणित 'टी' मान 8.42 प्राप्त हुआ जो कि सारणी मान (.05 स्तर पर 2.04 एवं .01 स्तर पर 2.76) से अधिक है जो यह स्पष्ट करता है कि प्रायोगिक समूह के पश्च परीक्षण एवं नियंत्रित समूह के पश्च परीक्षण के मध्य .01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।

निष्कर्ष/शून्य परिकल्पनाओं की जॉच

उपर्युक्त दत्त विश्लेषण के आधार पर शून्य परिकल्पना संख्या 06 **कि प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह के पठन कौशल के पूर्व परीक्षणों के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। स्वीकार की गई।**

तालिका संख्या – 04

नियंत्रित समूह एवं प्रायोगिक समूह के पठन कौशल के पूर्व एवं पश्च परीक्षणों के मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी' मान

समूह	पूर्व परीक्षण		पश्च परीक्षण		सह–सम्बन्ध	'टी' मूल्य	परिणाम
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन			
नियंत्रित	26.77	6.57	27.62	6.45	.83	1.24	असार्थक अन्तर
प्रायोगिक समूह परीक्षण	26.67	8.55	52.77	16.80	.19	8.24	.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

स्वतंत्रता अंश (कf) त्र29 सारणी मान

सार्थकता/विश्वास स्तर .05 स्तर पर त्र 2.04

.01स्तर पर त्र 2.76

व्याख्या

उपर्युक्त तालिका यह दर्शाती है कि पठन कौशल के अन्तर्गत नियंत्रित समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य संगठित 'टी' मान 1.24 प्राप्त हुआ। जो कि सारणी मान (.05 स्तर पर 2.04 एवं .01 स्तर पर 2.76) से कम है जो यह स्पष्ट करता है कि नियंत्रित समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रायोगिक समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य संगठित 'टी' मान 8.24 प्राप्त हुआ जो कि सारणी मान (.05 स्तर पर 2.04 एवं .01 स्तर पर 2.76) से अधिक है जो यह स्पष्ट करता है कि प्रायोगिक समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य .01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।

निष्कर्ष/शून्य परिकल्पनाओं की जॉच

उपर्युक्त दत्त विश्लेषण के आधार पर शून्य परिकल्पना संख्या 05 ***नियंत्रित समूह के पठन कौशल के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।*** **स्वीकार की गई।**

शून्य परिकल्पना संख्या 04 ***प्रायोगिक समूह के पठन कौशल के पूर्व एवं पश्च परीक्षणों के प्राप्तांकों के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। निरस्त की गई।***

(3) लेखन कौशल के विकास में क्रिया आधारित उपागम ;जें ठेंमक ।चचतवंबीद्ध की प्रभावशीलता

तालिका संख्या – 5

नियंत्रित समूह एवं प्रायोगिक समूह के लेखन कौशल के पूर्व एवं पश्च परीक्षणों के मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी' मान

परीक्षण	नियंत्रण समूह		प्रायोगिक समूह		सह–सम्बन्ध	'टी' मूल्य	परिणाम
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन			
पूर्व परीक्षण	16.62	4.94	16.58	8.90	.40	.02	असार्थक अन्तर
पश्च परीक्षण	17.42	5.23	32.30	12.29	.05	6.22	.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

स्वतंत्रता अंश (कf) त्र29

सारणी मान

सार्थकता/विश्वास स्तर .05 स्तर पर त्र 2.04

.01स्तर पर त्र 2.76

व्याख्या

उपर्युक्त तालिका यह दर्शाती है कि संस्कृत में लेखन कौशल के अन्तर्गत नियंत्रित समूह के पूर्व एवं प्रायोगिक समूह के पूर्व परीक्षण के मध्य संगठित 'टी' मान .02 प्राप्त हुआ। जो कि सारणी मान (.05 स्तर पर 2.04 एवं .01 स्तर पर 2.76) से कम है इससे यह स्पष्ट होता है कि दोनों समूहों के पूर्व परीक्षणों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं था अर्थात् प्रायोगिक शिक्षण के पूर्व दोनों समूह अकादमिक स्तर पर समान थे।

नियंत्रित समूह के पश्च परीक्षण एवं प्रायोगिक समूह के पश्च परीक्षण के मध्य संगठित 'टी' मान 6.22 प्राप्त हुआ जो कि सारणी मान (.05 स्तर पर 2.04 एवं .01 स्तर पर 2.76) से अधिक है इससे यह स्पष्ट होता है कि नियंत्रित समूह के पश्च परीक्षण एवं प्रायोगिक समूह के पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्यमानों के मध्य .01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।

निष्कर्ष/शून्य परिकल्पनाओं की जॉच

उपर्युक्त दत्त विश्लेषण के आधार पर शून्य परिकल्पना संख्या 09 *कि प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह के लेखन कौशल के पूर्व परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।* स्वीकार की जाती है।

तालिका संख्या – 06

नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूह के लेखन कौशल के पूर्व एवं पश्च परीक्षणों के मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी' मान

परीक्षण	पूर्व परीक्षण		पश्च परीक्षण		सह–सम्बन्ध	'टी' मूल्य	परिणाम
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन			
पूर्व परीक्षण	16.62	4.94	17.42	5.23	.07	.63	असार्थक अन्तर
पश्च परीक्षण	16.98	8.90	32.30	12.29	7.90	7.90	.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

स्वतंत्रता अंश (*कf*) त्र29

सारणी मान

सार्थकता/विश्वास स्तर .05 स्तर पर त्र 2.04

.01स्तर पर त्र 2.76

व्याख्या

उपर्युक्त तालिका यह दर्शाती है कि लेखन कौशल के अन्तर्गत नियंत्रित समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य संगठित 'टी' मान .63 प्राप्त हुआ। जो कि सारणी मान (.05 स्तर पर 2.04 एवं .01 स्तर पर 2.76) से कम है जो यह स्पष्ट करता है कि नियंत्रित समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रायोगिक समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य संगठित 'टी' मान 7.90 प्राप्त हुआ जो कि सारणी मान (.05 स्तर पर 2.04 एवं .01 स्तर पर 2.76) से अधिक है जो यह स्पष्ट करता है कि प्रायोगिक समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य .01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।

निष्कर्ष / शून्य परिकल्पनाओं की जॉच

उपर्युक्त दत्त विश्लेषण के आधार पर शून्य परिकल्पना संख्या 08 ***नियंत्रित समूह के लेखन कौशल के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।*** **स्वीकार की गई।**

शून्य परिकल्पना संख्या 07 ***प्रायोगिक समूह के लेखन कौशल के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। निरस्त की गई।***

शैक्षिक निहितार्थ

(1) भाषायी दक्षता आधारित शैक्षिक निहितार्थ – संस्कृत में शब्द संरचना एवं वाक्य संरचना में 'क्रिया आधारित उपागम (जें ठेंमक ।चचतवंबी) का विद्यार्थियों की भाशायी दक्षता पर प्रभाव पड़ा है इस आधार पर भाषायी दक्षता के शैक्षिक निहितार्थ निम्नानुसार है–

1. विद्यार्थी निर्धारित समूह में शब्द संरचना करते हैं एवं शब्द संरचना के बाद धीरे–धीरे वाक्य संरचना करते हैं फलस्वरूप विद्यार्थी व्याकरण के नियमानुसार शुद्ध शब्द संरचना एवं वाक्य संरचना करना सीख जाते है जिसके फलस्वरूप उनकी सम्प्रेषण कुशलता में भी वृद्धि होती है।
2. शब्द संरचना एवं वाक्य संरचना के समय विद्यार्थी के साथ शिक्षक सहभागी एवं मार्गदर्शक मात्र होता है। इस कारण विद्याथी सहज रहते हैं विद्यार्थी स्वयं अपने समूह के साथ सक्रिय रहकर चिन्तन करके शब्द संरचना एवं वाक्य संरचना करते हैं।
3. क्रिया आधारित उपागम (जें ठेंमक ।चचतवंबी) विद्यार्थियों में रटने की प्रवृत्ति क्रमशः कम कर सृजनात्मकता एवं नवीन चिन्तन का विकास करने में सहायक है।

(2) पठन कौशल आधारित शैक्षिक निहितार्थ– वस्तुतः पठन कौशल का उद्देश्य होता है छात्र विषय–वस्तु को पढ़कर उसमें से सूचनाएं ग्रहण करें एवं उन संकलित सूचनाओं को लेखन के माध्यम से स्थानान्तरित एवं अभिव्यक्त करें। विद्यार्थियों में पठन कौशल के विकास में 'क्रिया आधारित उपागम' (जें ठेंमक ।चचतवंबी) का प्रभाव पड़ा है। इस आधार पर पठन कौशल के सन्दर्भ में शैक्षिक निहितार्थ इस प्रकार है –

1. इस उपागम के माध्यम से किए जाने वाले शिक्षण में छात्र पठन सामग्री को पढ़ते हुए सूचनाएं संकलित करते हैं इससे छात्रों में पठन कौशल का विकास होता है जो कि प्रत्येक भाषा शिक्षण का एक मुख्य उद्देश्य होता है।
2. इस उपागम के माध्यम से शिक्षण करते समय/हुए छात्र समूह में कार्य करते हैं जिससे उनमें प्रजातंत्रात्मक प्रणाली का विकास होता है। इस प्रजातंत्रात्मक प्रणाली को अन्य उपागमों एवं विधियों में भी अपनाया जा सकता है।
3. इस उपागम के माध्यम से शिक्षण करते समय छात्र पठन सामग्री/विषय–वस्तु को पढ़ते हुए विषय सम्बन्धी सूचनाएँ संकलित करते हैं जिससे उनमें पठन/वाचन में एकाग्रता बनी रहती है। परिणामस्वरूप उनमें वर्णित विषय–वस्तु, भाषा एवं पठन कौशल का विकास होता है।

4. छात्र व्याकरण सम्बन्धी 'टास्क' करते हैं। इसके अन्तर्गत शिक्षक के निर्देशानुसार छात्र पठन सामग्री/विषय–वस्तु में से किसी व्याकरणिक वर्ग आधारित शब्द को खोजकर लिखते हैं इसमें विद्यार्थियों को व्याकरण का व्यावहारिक ज्ञान होता है एवं वे नवीन शब्द संरचना करने में समर्थ बनते हैं।

(3) **लेखन कौशल आधारित शैक्षिक निहितार्थ–** प्रायोगिक शोध के परिणाम बताते है कि 'क्रिया आधारित उपागम' (Task Based Approach) विद्यार्थियों में लेखन कौशल का विकास कर सकता है। लेखन कौशल सम्बन्धी शैक्षिक निहितार्थ इस प्रकार है–

1. इस उपागम के माध्यम से शिक्षण के अन्तर्गत छात्र विषय–वस्तु को पढ़कर सूचनाएँ संकलित करते हैं एवं उन संकलित सूचना को लेखन कौशल के माध्यम से स्थानान्तरित एवं अभिव्यक्त करते हैं इसके फलस्वरूप छात्रों में लेखन कौशल का विकास होता है।

2. इस उपागम के माध्यम से शिक्षण कार्य करके छात्रों की लेखन दक्षता एवं अकादमिक उपलब्धि में सार्थक विस्तार किया जा सकता है।

3. इस उपागम के माध्यम से शिक्षण के फलस्वरूप विद्यार्थियों में शुद्ध एवं उपयुक्त 'बाह्य निर्माण सम्बन्धी कौशल' का विकास किया जा सकता है।

4. इस उपागम के माध्यम से शिक्षण के फलस्वरूप विद्यार्थियों में प्रभावी सम्प्रेषण कौशल का विकास किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Aggarawa;, Y.P.(1988), **Better Sampling : Concept, Techniques and Evaluation**, New Delhi : Sterling Publishers Pvt. Ltd.

2. Best, J.W. and Kahan Jones V. (1996), **Research in Education**, New Delhi : Prentice Hall, Pvt. Ltd.

3. Numan, David (1993), **Designing Task for Communicative Classroom,** Cambridge University Press.

4. Rod Ellis, 2003, **Task Based Language Teaching and Learning**, Oxford : Oxford University Press.

5. Willis, Jane (1996), **A Framework for Task Based Learning**, Oxford : Oxford University Press.

*** Corresponding Author:**

डॉ. बी.एल. श्रीमाली, सहायक आचार्य

जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय

उदयपुर (राजस्थान)